

मदूरा हैं मद्रास में मालिकु

८६

इऐं अनुराग आनन्द जी, वरिड़े कई विखंह ।
 पोइ शयनु कयो गाढ़ीअ में, सत्संगति जे सूंह ॥
 भूरल जागी भोर जो, सिय रघुवरु ध्यायो ।
 कोकिल कूंजत कण्ठ सां, रागु मधुरु गायो ॥
 मंझदि जो मालिक मिठा, अची मदूरा मंझि लथा ।
 जिते देवीअ मंदिर में, अचनि यात्रियुनि जथा ॥

जाहिरु आहे जगृत में, मीनाक्षी महाराणी ।
 १जहिंजी१ स्तुति कई अदब सां, अबल मिठीअ वाणी ॥
 नीलम कान्ति देवीअ जी, मालिक मन भाई ।
 चयो सत्संगियाणी शंकर जी, जणु ध्याये रघुराई ॥
 उमंग सां अबल मिटे, तहिंखे खीरणी खाराई ।
 मीनाक्षीअ दिनी महिर सां, वर जी वाधाई ॥
 शोड़ष भुजी देवीअ जो, हिकु चित्रु सुखदाई ।
 साहिब वतो सनेह सां, देई भेटा मन भाई ॥
 रांदीका केई काठ जा, सुन्दर रंग भरिया ।
 अमड़ि वरिता उमंग मां, दासनि नेण ठरिया ॥
 मदूरा में हिक राति रही, आया मद्रास में मालिक ।
 मच्छी कालेजु उते दिठो, जानिब जग पालक ॥
 लखें नमूना मच्छियुनि जा, रंगा रंगी सुन्दरु ।
 दिसे देखारे बचनि खे, बाबलु गुण मन्दरु ॥
 ट्रे दीहैं रही मद्रास में, आयमि जगन्नाथ जानी ।
 दूध वारी धर्म साल में, लथो दीननि जो दानी ॥
 पहिरियों दीहूं प्रीति सां, कई जगदीश महिमान्नी ।
 लालनु लासानी, खीरणी खाई खुशि थियो ॥